सलोनी का निर्णय

सुधा गोयल
बुलंदशहर

स्कूल से लौटकर सलोनी ने अपना बैग अलमारी में रखा, पर उसे दादी की आवाज सुनाई नहीं दी। कमरे में पैर रखते ही दादी कहती–"आ गई बिटिया", और सलोनी दादी के पास उनके पलंग पर बैठकर जूते मोजे उतारती, चोटी खोलती और इस बीच स्कूल की बातें भी दादी को बताती। दादी लड़ियातीं– "बिटिया पहले कपड़े बदलकर हाथ मुंह धो लो। फिर बताना।"

सलोनी ऐसा ही करती। पर आज उसे दादी दिखाई नहीं दीं। उसने दादी–दादी कहकर आवाज लगाई। फिर मम्मी से जाकर पूछा–"मम्मी, दादी कहां हैं। दिखाई नहीं दे रही? "अरे हां, मैं बताना भूल गयी। वे अपने एक रिश्तेदार के यहां रहने चली गई हैं। जब उनका मन भर जाएगा, आ जाएंगी।"

"कौन रिश्तेदार मम्मी? मैंने तो कभी दादी के किसी रिश्तेदार को नहीं देखा बस बड़ी बुआ मां, अपनी बुआ जी और चाचाजी को देखा है। आप मुझे उनका फोन नंबर दो। मैं उनसे पूछती हूं कि मुझे बिना बताए क्यों चली गईं। और कब तक लौटेंगी?"

"मेरे पास उनका नम्बर ही नहीं है। कितनी बड़ी गलती कर दी कि नम्बर ही नहीं लिया। खैर, अभी तुम खाना खा लो। जब तुम्हारे पापा आ जाएंगे उन्हें पूछ लेना। वे शायद जानते हों।"

तब तक मम्मी ने सलोनी की खाने की प्लेट लगा दी। सलोनी पहला कौर दादी के हाथ से खाती थी। दादी पोती दोनों साथ खाना खाती थीं। आज सलोनी ने दो कौर खाकर प्लेट खिसका दी। उसका खाना खाने का मन नहीं हुआ। वह जाकर पलंग पर लेट गई। यह कमरा दादी पोती दोनों का था। वह तकिए पर सिर रख कर रोने लगी। तभी उसे ख्याल आया कि पापा से दादी का नम्बर ले ले। उसने पापा को फोन लगाया– "दादी मां का नंबर बोलो"।

"अभी मैं मीटिंग में हूं। शाम को घर लौटकर बात करा दूंगा।"

सलोनी तकिए पर सिर रखकर सो गयी। मम्मी ने ऑफिस फोन कर पापा को बता दिया था और पापा ने दादी को बता दिया कि सलोनी फोन करे तो कह देना थोड़े दिन बाद आऊंगी।

शाम को दादी से बात करके सलोनी को थोड़ी तसल्ली हुई। रविवार था उस दिन। सलोनी जिद्द पकड़ गयी कि सब दादी से मिलने चलो। मम्मी–पापा ने खूब समझाया कि दादी को थोड़े दिन रहने दो। कभी–कभी अपने पुराने लोगों के साथ रहने का भी मन करता है।

सब तैयार होकर पहुंचे। दादी एक बड़े से हॉल में सबका इंतजार कर रही थी। सलोनी दादी से लिपट कर रोने लगी। आप मुझे बिना बताए क्यों चली आईं। मेरा आपके बिना जरा भी मन नहीं लगा। अब मैं आपके पास यहीं रहूंगी।

"तू यहां रहकर क्या करेगी? यहां तेरा कोई संगी साथी भी नहीं है। फिर वहां तेरा स्कूल भी है। जब तेरा मन करे फोन पर बात कर लेना।"

"दादी, आपके रिश्तेदार कहां हैं?

"अभी बुलाती हूं"–दादी अंदर जाकर बुला लाई। "बिटिया, ये मेरे भैया भाभी हैं", सलोनी ने उन्हें प्रणाम किया और पूछा–"आप लोग कभी हमारे घर नही आए। दादी मां काफी दिन आपके साथ रह लीं। अब अपने साथ ले जाएंगे।

"अभी कुछ ही दिन हुए हैं। जब कहेंगी छोड़ आएंगे।"

"पर दादी के बिना मेरा मन नहीं लगता। "सलोनी फिर रोने लगी। पापा ने डांटा–"सलोनी, ये क्या बचपना है। तुम बहुत जिद्दी होती जा रही हो। बहुत देर हो गई है। अब घर चलते हैं।"

दादी ने सलोनी को खूब प्यार किया। उनकी भी आंखें भर आईं। वे सब लौट गए। दादी निःश्वास खींच कर रह गई।

वक्त खिसकता रहा। सलोनी ने दादी के बिना जीना सीख लिया। जब बहुत मन करता पापा मम्मी के साथ मिलने चली जाती।

एक बार पंद्रह अगस्त पर सलोनी के स्कूल से वृद्धाश्रम जाकर वृद्धों को फल मिठाई बांटने का कार्यक्रम बना। सलोनी भी साथ थी। बस जैसे ही आश्रम के बाहर रूकी–सलोनी चौंक उठी। यहां तो दादी रहती है। ये उनके भैया भाभी का घर है। जरूर टीचर से गलती हुई है।

लेकिन उसने किसी से कुछ नहीं कहा। वह भी सबके साथ–साथ चल रही थी। सभी वृद्ध वृद्धाएं एक बड़े हाल में पंक्ति में खड़े थे। बच्चे उन्हें फल मिठाई दे रहे हैं। सलोनी भी दे रही थी। एक वृद्धा के पास जाकर रूक गई।

"दादी आप? यह तो आपके भैया भाभी का घर है। फिर टीचर इसे वृद्धाश्रम क्यों कह रही है?"

"बिटिया, यह आश्रम मेरे भैया भाभी का घर है। "बिटिया, यह आश्रम मेरे भाई भाभी का ही है"– सुनकर सलोनी के ज्ञान चक्षु खुल गये। "फिर आप लाईन में क्यों हो? आप सबने मुझे झूठ बोला। अब मैं भी आपके साथ यहीं रहूंगी। जो बेटा–बहू आपको साथ नहीं रख सकते मैं ऐसे मां–बाप के साथ नहीं रह सकती। उन्होंने आपको त्यागा। मैं आज सबके सामने उनका त्याग करती हूं। और सलोनी दादी से लिपट गई।

राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी हमारे देश की एकता में सबसे अधिक सहायक सिद्ध होगी, इसमें दो राय नहीं।

–जवाहरलाल नेहरू